शिव स्तोत्र ।आदि अनादि अनंत अखंड । By B R Nagina ।

आदि अनादि अनंत अखंड अभेद अखेद सुबेद बतावैं ।
अलख अगोचर रूप महेस कौ जोगि-जति-मुनि ध्यान न पावैं
आगम निगम पुरान सबै इतिहास सदा जिनके गुन गावैं ।
बड़भागी नर-नारि सोई जो सांब-सदाशिव कौं नित ध्यावैं

सृजन सुपालन-लय-लीला हित जो विधि-हरि-हर रूप बनावैं ।
एकहि आप बिचित्र अनेक सुबेष बनाइ कैं लीला रचावैं
सुंदर सृष्टि सुपालन करि जग पुनि बन काल जु खाय पचावैं ।
बड़भागी नर-नारि सोई जो सांब-सदाशिव कौं नित ध्यावैं

अगुन अनीह अनामय अज अविकार सहज निज रूप धरावैं ।
परम सुरम्य बसन-आभूषण सजि मुनि-मोहन रूप करावैं
ललित ललाट बाल बिधु विलसै रतन-हार उर पै लहरावैं ।
बड़भागी नर-नारि सोई जो सांब-सदाशिव कौं नित ध्यावैं

अंग विभूति रमाय मसान की विषमय भुजगनि कौं लपटावैं ।
नर- कपाल कर मुंडमाल गल, भालु-चरम सब अंग उढावैं
घोर दिगंबर, लोचन तीन भयानक देखि कैं सब थर्रावैं ।
बड़भागी नर-नारि सोई जो सांब-सदाशिव कौं नित ध्यावैं

सुनतहि दीन की दीन पुकार दयानिधि आप उबारन धावैं ।
पहुँच तहाँ अविलंब सुदारुन मृत्यु को मर्म बिदारि भगावैं
मुनि मृकंडु-सुत की गाथा सुचि अजहुँ बिग्यजन गाइ सुनावैं ।
बड़भागी नर-नारि सोई जो सांब-सदाशिव कौं नित ध्यावैं

चाउर चारि जो फूल धतूर के, बेल के पात औ पानी चढ़ावैं ।
गाल बजाय कै बोल जो 'हर हर महादेव' धुनि जोर लगावैं
तिनहिं महाफल देय सदाशिव सहजहि भुक्ति-मुक्ति सो पावैं ।
बड़भागी नर-नारि सोई जो सांब-सदाशिव कौं नित ध्यावैं

बिनसि दोष दुख दुरित दैन्य दारिद्रय नित्य सुख-शांति मिलावैं ।
आसुतोष हर पाप-ताप सब निरमल बुद्धि-चित्त बकसावैं
असरन-सरन काटि भवबंधन भव निज भवन भव्य बुलावैं ।
बड़भागी नर-नारि सोई जो सांब-सदाशिव कौं नित ध्यावैं

औढरदानि उदार अपार जु नैकु-सी सेवा तें ढुरि जावैं ।
दमन असांति, समन सब संकट, विरद बिचार जनहि अपनावैं
ऐसे कृपालु कृपामय देव के क्यों न सरन अबहीं चलि जावैं ।
बड़भागी नर-नारि सोई जो सांब-सदाशिव कौं नित ध्यावैं

https://bhaktivandana.com/lyrics/%e0%a4%b6%e0%a4%bf%e0%a4%b5-%e0%a4%b8%e0%a5%8d%e0%a4%a4%e0%a5%8b%e0%a4%a4%e0%a5%8d%e0%a4%b0%e0%a5%a4%e0%a4%86%e0%a4%a6%e0%a4%bf-%e0%a4%85%e0%a4%a8%e0%a4%be%e0%a4%a6%e0%a4%bf-%e0%a4%85%e0%a4%a8/